REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2018

नरेंद्र मोहन के नाटकों में राजैतिक संवेदना

प्रा. डॉ. जाधव युवराज इंद्रजित
आदर्श महाविद्यालय, उमरगा, ता.उमरगा
जि. उस्मानाबाद

भूमिका :-

नरेंद्र मोहन हिंदी साहित्य के एक सशक्त साहित्यकार है । उनका रचना साहित्य बहुआयामी है । उन्होंने कविता, नाटक, डायरी, संस्मरण, आलोचना आदि अनेक साहित्य विधाओं का सृजन किया हैं । नरेंद्र मोहन का रचना- संसार व्यापक और विस्तृत है । उसकी अपनी एक दिशा और जीवन दृष्टि है जो पूर्वाग्रहों से मुक्त है । नरेंद्र मोहन ने अपने नाटकों में इतिहास और राजनीति के माध्यम से विभिन्न संदर्भो को उठाया है । ये संदर्भ आज की विसंगतियों से गुजरते हुए आम आदमी के अस्तित्व पर गहरानेवाले संकटों के विविध आयामों को दर्शाती हैं । "नरेंद्र मोहन ने लम्बी कविताओं का सृजन किया हैं । नरेंद्र मोहन एक सशक्त नाटककार, अनुभूतिजन्य कविता के माध्यम से और एक प्रामाणिक श्रेष्ठ आलोचक के रुप में हमारे सामने आते हैं । उनका साहित्य केवल चिंतन की उपज नहीं जीवनानुभवों का परिपाक हैं । नरेंद्र मोहन बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं ।"[1] उनके साहित्यिक जीवन की शुरुआत कविता से हुई हैं । उसके बाद नाटक, समीक्षा, संपादक, अनुवाद, संस्मरण, डायरी, साक्षात्कार आदि विधाओं में उनकी प्रतिभा का पल्लवन हुआ ।

अत: भारतीय राजनीति सत्ता का पर्याय बन गई है । आज हमारी राजनीति असमंजस की राजनीति बन गई है । जनता का शासकों तथा राजनेताओं पर से विश्वास उठ गया हैं । देश में शासन तंत्र के स्थान पर अराजकता तथा स्वार्थ का शासन हो गया है । हर ओर राजनीतिक असंतोष, संत्रास तथा घुटन है । नरेंद्र मोहन ने नेता बनने की भूख तथा सत्ता पाने के स्वार्थ में जुडे प्रत्येक राजनीतिज्ञ की वास्तविकता सामने लाई हैं । स्वतंत्र भारत की राजनीति भ्रष्ट हो गई है । राजनीति के मूल मे जो आदर्श था जो गांधी के समय से आ रहा था अब नष्ट हो गया हैं । अब सत्य का राज है, न अहिंसा का, न मानवता का । हर ओर हिंसा, झूठ तथा पाशविकता का दृश्य दिखायी देता है । आज अवसरवादिता का बोलबाला है । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में वर्तमान राजनीतिक दुर्दशा का यथावत चित्रण मिलता है । साहित्य राजनीति से अछुता नहीं है । राजनीति के केंद्र में व्यक्ति है और व्यक्ति साहित्य के मूल में हैं । अत: साहित्य और राजनीति का सम्बन्ध अत्यधिक गहन है। डॉ. नरेंद्र मोहन के नाटकों में भी इस राजनीति का यथावत चित्रण मिलता है जो राजनीति का असली रुप प्रकट करता हैं । यहाँ हमने नरेंद्र मोहन के नाटकों में व्यक्त राजनीतिक समस्याओं का जिक्र किया हैं ।

• नरेंद्र मोहन के नाटकों में राजनीतिक संवेदना :-

1) देश विभाजन की त्रासदी :-

डॉ. नरेंद्र मोहन ने देश विभाजन की त्रासदी तथा राजनीति का उसमें प्रमुख हाथ बताते हुए अपने नाटक "नौ मैस लैण्ड" के अंतर्गत इसका चित्रण किया है । 'नो मैस लॅण्ड' भारत विभाजन की ऐतिहासिक पृष्ठभमि पर आधारित नाटक है । विभाजन के फलस्वरुप हिन्दू-मुसलमान का बँटवारा, हिन्दू-पागलों को हिन्दुस्तान और मुस्लिम पागलों का पाकिस्तान भेजने का चित्रण किया है । भजनसिंह, सुराजुद्दीन एवं अली के संवादों से नाटक में संघर्ष गहराने लगता है तथा इस देश विभाजन की घटनाओं के पीछे की राजनीतिक षडयंत्रो को स्पष्ट करती हैं । देश विभाजन के बाद ऐसी परिस्थितियॉ पैदा हुई जिनके कारण देश में भ्रष्टाचार, राजनीतिक अवसरवाद, धार्मिक कट्टरता आदि विसंगतियो ने समाज को अंधेरे के गर्त में ढकेल दिया था । समाज पागलों की तरह एक - दूसरे पर झपट रहा था । धार्मिक दंगो-फसादों ने आम आदमी की जिंदगी को नेस्तमाबूत कर दिया था । देश की विसंगतियाँ सुराजुद्दीन के संवाद से देखी जा सकती है- "दिख्र नहीं रहा ? झाडू लगा रहा हूँ । चारो तरफ गंदगी । झाडू लगा - लगाकर परेशान हूँ। कहाँ से आता है इतना कूडा ? सचमुच समाज में इतनी गंदगी फैली गयी थी कि राजनीति के षडयंत्र ने दोनों देशों को बाट दिया था । इस नाटक का एक पात्र बिशनसिंह है आजादी के बाद पागल हो गया है क्योंकि जिसने दिन रात काम किया उसका वतन छीना गया है । हिन्दू को हिन्दुस्तान तथा मुसलमानों को

पाकिस्तान मजबूरी से जाना पडा लेकिन एंग्लो इंडियन का यह संवाद देश विभाजन के राजनीतिक षडयंत्र पर करारा व्यंग करता है- "हिन्दू- हिंदुस्तान जायेगा, मुसलमान पाकिस्तान जायेगा, वेअर विल आई गो बोलो, वेअर विल आई गो?"[2] यह कथन भौगोलिक तथा जाति के नाम पर किये गये बँटवारे पर प्रश्नचिन्ह लगता है । तथा राजनीतिक वर्ग की क्रुर साजिश सामने लाता है । मानवता को इस तरह अलग करने के पीछे शासन तंत्र और नेताओं की स्वार्थान्धता, अन्याय एवं बर्बरता पूर्ण नीतियाँ कार्य करती हैं इसका चित्रण है।

इस प्रकार देश विभाजन बाद मानवीय मूल्य टूट गये है। संकीर्ण राजनीतिक और धार्मिक जुनून की बर्बरता तथा पशुता के नंगे नाच ने आम आदमी को भीतर से तोड दिया । इस सभी घटनाओं के पीछे शासन का हाथ था । इन लोगों ने हिन्दू-मुस्लिम को आपस में लडाकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर लिया था । सुभाष चौधरी के मतानुसार "नाटक में सभी पात्र पागल है, दर्द और वेदना से ग्रसित है लेकिन मूर्ख नहीं है । इसलिए जीवन की विभषिका, राजनैतिक बर्बरता और धार्मिक हत्याओं की तीक्ष्णता को बखूबी समझकर इनकी कुत्सित, वृत्तियों, बीभत्सता और पाशविकता को अतियथार्थ तथा व्यंग्य के धरातल पर उजागर किया है । हम कह सकते है कि इसके पीछे स्पष्ट रुप से राजनीति का हाथ प्रमुख था । इन सभी घटनाओं को नाटककार नरेंद्र मोहन ने अपने नाटक 'नो मैस लॅण्ड' मे किया है।

2) जनता विमुख राजनीति :-

नरेंद्र मोहन ने अपने नाटकों में जनता विमुख राजनीति का पर्दाफाश किया है । पूँजीपती का पर्दाफाश किया है । राजनिति में हमेशा पूँजीपती, जमींदार, तथा धार्मिक वर्ग की रक्षा की जाती हैं और आम जनता पर अन्याय तथा अत्याचार किया जाता हैं । डॉ. नरेंद्र मोहन ने अपने नाटक 'सींगधारी' में नेता का जनता से विमुख होने तथा उनके भ्रष्ट राजनीति का पर्दाफाश किया हैं । "आज के नेता आम जनता के द्वारा मतदान लेकर चुनकर जाते है लेकिन जब वहीं नेता सत्ता पर आरुढ हो जाते है तब वह जनता की तरफ ध्यान नहीं देते । इतना ही नहीं जब वह कोई अपनी माँगे या अधिकार माँगता है तो उसे गोलियों का शिकार बनना पडता है। नाटक में दृश्य तीन के अंतर्गत इसी स्थिती को उजागर किया है । जीते के संवाद से- "पोस्टर लगा रहा था । (पोस्टर अब भी उसकी बाँह में डोरी के साथ लटका है, जिस पर लिखा है हमारी माँगे पूरी करो) तभी गोली चल गई।"[4] इससे स्पष्ट होता है कि जित को पोस्टर लगाते वक्त मारा गया । उसका गुनाह सिर्फ यह था की वह अपना अधिकार माँग रहा था । इस नाटक में नेता जमींदार तथा साहुकार के साथ मिलकर कैसे आतंक फैलाता है इसका चित्रण है । अत: इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि सत्ताधारी वर्ग आम जनता से विमुख होता जा रहा हैं । "कहै कबीर सुनो भाई साधो" नाटक के दृश्य चार में आम जनता पर होनेवाले अत्याचार का चित्रण हुआ है । यह नाटक ऐतिहासिकता के माध्यम से वर्तमान युग का यथार्थ प्रस्तुत करता हैं । सिकंदर लोदी शासक अपने आदमी कोतवाल, दीवान आदि के माध्यम से जनता का शोषण कैसे करता है इसका बयान कोधन तथा कबीर के माध्यम से प्रकट होता है । इस नाटक में एक किसान समाज में चल रहे शोषण के विरुद्ध ठाकूर तथा पटवारी की शिकायत लेकर दीवान के पास जाता है .. लेकिन दीवान और पटवारी आपस में मिले हुए है । इसी कारण वह किसान को बुरी तरह मारता है इसमें इस गरीब किसान की जान निकल जाती है । यब सब देखकर कबीर दु:खी होते है और बोधन तथा बिज लीखाँ को कहते है, "यह तो सरासर अन्याय है । क्या सुल्तान को खबर है कि उसके राज मे इतना जुल्म हो रहा है ।" इस प्रकार सुलतान के इशारे पर शोषण चलता रहता है तथा राजा के चापलूस आम जनता पर जुल्म करते रहते हैं । आज स्वतंत्रता के बाद भी हमारे देश में राजसत्ता के दंश पर आम जनता का शोषण हो रहा है । जब भी कोई आदमी किसी शोषण करनेवाले आदमी की शिकायत प्रशासन या सत्ताधारी वर्ग से करता है तो उसे डरा धमकाकर चुप किया जाता है ।

3) सत्य और इमानदारी का निषेध :-

नरेंद्र मोहन ने इस राजनीति के पक्ष को सींगधारी, अभंग-गाथा "कहै कबीर सुनो भाई साधे, मैस कलंदर" तथा नो भैस लैण्ड नाटको में चित्रित किया है । दिखाया गया है कि राजनीति सत्यता और ईमानदारी को किस प्रकार कुचलना चाहती है । 'कहे कबीर सुना भाई साधो' में कबीर ने समाज में होनेवाले अन्याय तथा अत्याचार का विरोध किया है तथा सिकंदर लोदी का असली चेहरा समाज के सामने लाने की कोशिश की है । इसी कारण सुलतान कबीर को सजा देना चाहता है लेकिन कबीर अपने सत्य तथा ईमानदारी के पक्ष पर डटकर खडे रहते है । कबीर कहते हैं - "मौत से क्या डरना, सुलतान ! एक सच के लिए हजार बार कुर्बान हुआ जा सकता हैं।"[5] कलंदर नाटक में भी राजनीतिक असत्यवादी चरित्र का उद्घाटन किया गया है । इस नाटक में मूलत: सुलतान खिलजी के समय में मुस्लिम दरवेश के एक नये सम्प्रदाय 'कलंदर' के उदय और एक ओर सुफी संत तो दूसरी ओर सुलतान इन दोनों के संघर्ष का चित्रण किया गया है । सीदी मौला असत्य तथा अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता है लेकिन सुलतान सीदी मौला को आग के हवाले कर देता है । इस प्रकार सच के पक्ष को लेकर तथा ईमानदारी से जनता का दु:ख को उद्घाटन करनेवाले सींदी मौला को मौत के घाट उतार देता है। दिनों-दिन बढ़ती हिंसा, स्वार्थ, आतंक से पीड़ित आम आदमी की विवशता, सच्चाई और ईमानदारी का पक्ष लेनेवाले की हत्या, घटना और

संवेदनहीनता मे निरंतर वृद्धी की तमाम स्थितियाँ इस नाटक में है । 'अभंग गाथा' नाटक में तुकाराम सत्ता के खिलाफ लड़ते झगडते है । इस नाटक में तुकाराम पशुता और हैवानियत से संघर्ष करते हुए इंसानियत का आदर्श प्रस्तुत करते है । अत: आज के राजनीति में सच और ईमानदारी से रहनेवालें को शासन बंधन डालती है ताकि उसका चेहरा समाज के सामने न आये। नरेंद्र मोहन ने अपने नाटकों में इस राजनीति का पर्दाफाश किया है ।

4) राजनेताओं की अमानवीयता :-

नरेंद्र मोहन के नाटकों में राजनेताओं की अमानवीयता एवं क्रूरता का चित्रण हुआ है । 'सींगधारी' नाटक मे नरेंद्र मोहन ने राजनेताओं के असत्य को सत्य सिद्ध करने, षड़यंत्रकारियों से संबंध रखने तथा जनसाधारण की प्रताड़ना करने आदि प्रवृत्ति को प्रस्तुत किया है । पूरे नाटक में नेताओं की क्रुरता स्वार्थपूरक धूर्तता, मक्कारी अपराधपूर्ण राजनीति तथा असत्यप्रियता की अभिव्यंजना हुई है । 'नो मैस लैण्ड' में भी राजनीतिक अमानवीय क्रूरता का चित्रण हुआ है । नाटक में मिथक स्थिति, एक ऐतिहासिक घटना, भारत विभाजन की त्रासदी और मंटो की कहानी टोबा टेकसिंह के आधार पर हुई है । यह नाटक राजनैतिक सत्ता और उसकी अमानवीयता पर करारा व्यंग्य करती है ।

5) षड़यंत्र तथा अपराध पूर्ण राजनीति :-

नाटककार नरेंद्र मोहन ने षडयंत्रकारी तथा अपराधपूर्ण राजनीति को अपने नाटकों में चित्रित किया है जो राजनीति की अंदरुनी तस्वीर समाज के सामने पेश करती है । 'सींगधारी' नाटक के अंतर्गत नेताओं के अपराधपूर्ण राजनीति का चित्रण हुआ है । वह अपने किये हुए गुनाह छिपाने के लिए किस प्रकार षडयंत्र रचता है तथा सच को दबाने की कोशिश करता है उसका भी चित्रण किया है । नाटक के अंत मे नेताजी शिव को देशद्रोही तथा आतंकवाद के जुल्म में षडयंत्र करके फँसा देता है । इस प्रकार सींगधारी में राजनीति के अपराधपूर्ण राजनीति षडयंत्रो का पर्दाफाश किया है । कबीर ने अन्यायी तथा जनता का शोषण करनेवाले राजा के खिलाफ आवाज बुलंद कर दिया । इसी कारण सत्तापक्ष के लोग कबीर को किसी षडयंत्र में फँसाकर उसे मिटाना चाहते है । कबीर कहता है- मेरा कोई मजहब नहीं, मेरा किसी मजहब से विरोध नहीं, मेरे लिए राम-रहिम समान है ।" इस प्रकार सुल्तान अपने लोगो से षड़यंत्रोद्वारा कबीर को मजहब में तनाव निर्माण करने के जुल्म में सजा देने की कोशिश करता है । 'अभंगगाथा' नाटक में भी सत्ताद्वारा विरोधियों को बदनाम करने का प्रयास किया है । इस नाटक में महाराष्ट्र के महान संत तुकाराम ने अपने अभंगो के माध्यम से ब्राम्हणी तथा सत्ताधारी वर्ग की पोल खोल किया है । सत्ता का पक्ष लेकर चलनेवाले लोग तुकाराम को अपने षडयंत्रोद्वारा बदनाम करते रहते है । सत्ता से मिले हुऐ रामेश्वर भट्ट, मबांजी पाटील जैसे व्यक्ति द्वारा समाज के सच बोलनेवालों को कुचल दिया जाता है तथा उनके खिलाप अपराधपूर्ण राजनिती की जाती है । 'कलंदर' नाटक में भी राजनैतिक षड़यंत्रो को व्यक्त किया गया है। दृश्य पाँच के अंतर्गत मजीद के भाई ने सच कहने पर किस तरह सुलतान ने उसका कत्ल किया वह मजीद बताता है. "यह डरावना आदमी वही था जिसने मेरे भाई कासिम का नींद में कत्ल कर दिया था।" इस प्रकार शासन सुल्तान का हो या और किसी का सत्य कहनेवाले लोगों को कैसे खत्म कर देती है इसका चित्रण है । अत: हमारे देश का दूर्भाग्य ही रहा है कि विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होते हुए भी यहाँ आम जनता पर अन्याय हो रहा है । राजनीति के माध्यम से यहा ईमानदार तथा क्रांति करनेवाले लोगों को अपने षड़यंत्रो द्वारा परास्त किया जाता है । धनिक वर्ग तथा आतंवादी लोगों से मेल-जोल करके सत्ताधारी वर्ग राजनीतिक अपराध कर रहे है।

निष्कर्षत :-

कहा जाता सकता है कि आज की राजनीतिक स्थिती डांवाडोल हो गयी है । सत्ताधारी वर्ग में मूल्य विघटन हो गया है । सत्ता पाने के लिए यह वर्ग समाज में आतंक, साम्प्रदायिकता, धार्मिक भेदभाव फैला रहे है । समाज में जो सत्य और शोषण के विरोध में आवाज उठाता है उसे षड़यंत्र में फँसाकर खत्म कर दिया जा रहा है । आज के नेता सामान्य से विमुख होते जा रहे हैं । सत्ता प्राप्ति के बाद यह नेता उसे अपना सब कुछ मानते है और आम जनता का शोषण करते हैं इसी कारण आज समाज के चोर-बाजारी, दंगा-फसाद, साम्प्रदायिकता, मूल्यविघटन, सत्यपक्ष का निषेध आदि को नरेंद्र मोहन ने अपने नाटको में सशक्त ढंग से व्यक्त किया है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सृजन के आईने में नरेंद्र मोहन - सुभाष चौधरी, पृ. 86
2. नौ मैस लैण्ड -नरेंद्र मोहन - पृ. 38.

3. सींगधारी -नरेंद्र मोहन - पृ. 38
4. बही पृ. 34
5. कहै कबीर सुनो भाई साधो - नरेंद्र मोहन - पृ. 38